नैतिक प्रत्यय (Ethical concepts)

उचित और अनुचित :
(Right & Wrong)

'Right' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द Rectus से हुई है। इसका अर्थ है सीधा या नियमानुसार। अतः वह जो किसी नियम के अनुसार हो वह Right (उचित) है। दूसरी ओर 'Wrong' शब्द की उत्पत्ति 'Wring' से हुई है। इसका अर्थ है- टेढ़ा या ऐंठा हुआ। या जो नियमानुसार नहीं हो। अतः वह जो किसी नियम के अनुसार ना हो वह Wrong या अनुचित है। उचित और अनुचित दोनों ही नियम का संकेत करते हैं। नियम से संगति या असंगति रहने के कारण ही Right और Wrong का व्यवहार होता है। यदि कोई नियम या मानदंड ही ना हो तो असंगति या संगति का प्रश्न ही नहीं होगा।

Scanned with CamScanner

नियम भी अनेक प्रकार के होते हैं -

आर्थिक
वैज्ञानिक
राजनैतिक
धार्मिक
एवं नैतिक आदि।

आर्थिक नियम से किसी पदार्थ की संगति या असंगति हो तो वह आर्थिक दृष्टि से सही (Right) या अनुचित (wrong) कहलायेगा। उसी प्रकार अन्य प्रकार के नियमों में होगा।

नैतिक नियमों का ज्ञान सदा चेतना में नहीं रहती। किसी व्यक्ति को इसका ज्ञान स्पष्ट रहता है तो किसी को इसका अस्पष्ट ज्ञान रहता है। साधारणतः मानव आचरण का निर्णय कर लेने पर भी किस नैतिक नियम को दृष्टिकोण में रख कर निर्णय किया गया है इसका स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। वस्तु उचित और अनुचित दोनों सापेक्ष प्रत्यय हैं।

नैतिक नियम की चेतना अपरिवर्तनशील नहीं है। देश काल के परिवर्तन से नैतिक नियम बदलता रहता है।

Scanned with CamScanner

नैतिक नियम की चेतना अपरिवर्तनशील नहीं है। काल और देश के परिवर्तन से नैतिक नियम भी परिवर्तित होते रहे हैं। अतः उचित या अनुचित कर्मों का विचार भी बदलता रहता है, क्योंकि नियम पर ही वे आश्रित हैं।

कोई भी नियम किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए ही बनाया जाता है। उद्देश्यहीन नियम कोई नियम नहीं होता। नैतिक नियम भी, इसीलिए, मनुष्य के परम शुभ (highest good) की प्राप्ति के साधन हैं। उन नियमों के पालन से परम शुभ या जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव है। अतः उचित आचरण वही है, जो नियम के अनुकूल हो, जिससे परम शुभ की प्राप्ति होती है और अनुचित आचरण वह, जो नियम के विरुद्ध हो और जिससे परम शुभ की प्राप्ति सम्भव नहीं है। उचित (right) और अनुचित (wrong) का, इसीलिए, सम्बन्ध शुभ (good) और अशुभ (evil) कर्मों से है। इन प्रत्ययों का भी अर्थ जान लेना चाहिए।[1]

Scanned with CamScanner